International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 29-10-2021, Accepted: 15-11-2021, Published: 30-11-2021
Volume 3, Issue 4, 2021, Page No. 20-21

मुंशी प्रेमचंद की युगांतकारी कहानी 'कफ़न'

अर्चना शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध–आलेख का ध्येय कथा सम्राट मुंशी प्रेमचंद की युगांतकारी कहानी 'कफ़न' के यथार्थवादी स्वरुप को सोदाहरण लिपिबद्ध करना रहा है । मुंशी प्रेमचंद का रचना–संसार जीवन की सच्चाई से इतना भरा हुआ है कि शायद ही कोई पहलू अछूता बचा हो। 'कफ़न' कहानी उनकी रचनाधर्मिता का उत्कृष्ट उदाहरण है । इसके माध्यम से मुंशी प्रेमचंद ने साहित्यिक फ़लक पर जीवन के कठोर यथार्थ को जन–मानस के सम्मुख प्रस्तुत किया है । इस यथार्थ के माध्यम से 'कफ़न' कहानी के पूर्ण स्वरुप को प्रस्तुत करना शोध–आलेख का वास्तविक उद्देश्य रहा है।

मूल शब्दः यथार्थवाद, साहित्यकार, कालजयी, अमानवीकरण (De-humanization), समाज, वर्ग

प्रस्तावना

मुंशी प्रेमचंद की यथार्थवादी कहानी 'कफ़न' घीसू और माधव के अमानवीकरण (De-humanization) के माध्यम से ठोस सत्य को कुरेदकर सम्मुख प्रस्तुत कर देती है। मुझे मुंशी प्रेमचंद का वह कथन स्मरण हो आया है –

> 'सच्चा साहित्य कभी पुराना नहीं होता। वह सदा नया बना रहता है।'

दरअसल .... साहित्यकार युग द्रष्टा ही नहीं अपितु युग स्रष्टा भी होता है। मुंशी प्रेमचंद स्वयं सामाजिक क्रांति के अग्रदूत कहे जा सकते हैं। 'कफ़न' कहानी में घीसू–माधव के सामने जलती अलाव अग्निशून्य है, उसी प्रकार उन दोनों पात्रों का हृदय भी संवेदनाशून्य है। उनकी यह संवेदनहीनता ही उनसे पशुवत व्यवहार करवाती है और परिस्थितियों का शिकार बन जाती है – 'बुधिया'। बुधिया की जीवन–लीला प्रसव–पीड़ा के कारण समाप्त हो जाती है। यह व्यंग्य है– सामाजिक परिस्थितियों पर।

'कफ़न' एक जमीनी सच्चाई से जुड़ी कहानी है। आरंभिक काल से साहित्य मनोरंजन का मुख्य साधन रहा था। प्रेमचंद ने हिंदी कथा साहित्य को मनोरंजन के स्तर से ऊपर उठाकर जीवन के सार्थक संदर्भों से जोड़ दिया। उस युग की तत्कालीन समस्याएँ – पराधीनता, ज़मीदारों–महाजनों और सरकारी अमलों द्वारा किसानों का शोषण, निर्धनता, अशिक्षा, धर्मांधता, दहेज़ की कुप्रथा, स्त्रियों की पराधीनता, विधवा समस्या, जातिभेद, सांप्रदायिक–वैमनस्य एवं कुंठित मानसिकता – प्रेमचंद को साहित्य लेखन की प्रेरणा प्रदान कर रही थीं। कमला प्रसाद ने 'सामाजिक चेतना नामक निबंध में लिखा है –

"प्रेमचंद की निगाह ग़रीबों के साथ थी। ये उस समय कांग्रेस की नरम शाखा की नीति के बजाय समाजवादियों के करीब थे। जहाँ कहीं वे आर्य समाज पर गांधी के हृदय–परिवर्तनवादी नीति के अनुसार रचनाएँ लिखते हैं, वहाँ उनकी नीयत एक देशभक्त की है। राजनीतिक दृष्टि से कोई दिशा साफ़ न होने के कारण वे एक–एक सामाजिक सुधारवादियों को आजमाते थे। वे रचना लिखे जाने के बाद देखते थे कि उनके आदर्श मनुष्य के स्वभाव के साथ घुल पा रहे हैं या नहीं।"[1]

'कफ़न' कहानी में प्रेमचंद ने घीसू और माधव के माध्यम से समाज की उस व्यवस्था पर प्रहार किया है, जिन्होंने घीसू और माधव को जन्म दिया है। इस कथा में प्रेमचंद ने घीसू और माधव का अमानवीकरण किया है। प्रेमचंद ने 'कफ़न' कहानी के माध्यम से समाज का ऐसा चित्र प्रस्तुत किया है, जो अन्याय और शोषण पर टिका है। घीसू और माधव जैसे समाज के कमज़ोर तबके के लोगों की बेपरवाही इसी समाज–व्यवस्था की उपज है। प्रेमचंद ने घीसू को किसानों से अधिक 'विचारवान' बताया है।

'कफ़न' चरमराती सामंती व्यवस्था के अंत का उद्घोष है। समाज द्वारा दमित हुआ वर्ग जब समाज की आँख में धूल झोंककर उसके नियमों की धज्जियाँ उड़ाता है तो व्यवस्था की सीमाओं पर करारी चोट पड़ती है। घीसू और माधव इस व्यवस्था से प्रतिशोध लेते नज़र आते हैं। वे खुलकर सामाजिक नियमों, रीति–रिवाजों तथा धार्मिक पाखण्डों की धज्जियाँ उड़ाते हैं।

वस्तुतः प्रेमचंद 'कफ़न' के माध्यम से एक ऐसी कहानी रचते हैं जो सार्वकालिक और कालजयी सिद्ध होती है। इस कहानी में 'भूख' को माध्यम बनाकर संवेदनशून्यता को जिस रूप में दर्शाया गया है, वह अमानवीयता की पराकाष्ठा को दर्शाती है –

> "घीसू ने आलू निकालकर छीलते हुए कहा, 'जाकर देख तो क्या दशा है उसकी? चुड़ैल का फ़िसाद होगा, और क्या? यहाँ तो ओझा भी एक रुपया मांगता है।"[2]

मुंशी प्रेमचंद अग्रिम तौर पर लिखते हैं –

> "माधव को भय था कि वह कोठरी में गया, तो घीसू आलुओं का बड़ा भाग साफ़ कर देगा।"[3]

भोजन मनुष्य की प्राथमिक आवश्यकता है। उसी प्रकार घीसू और माधव के लिए भी उनकी भूख प्रथम आवश्यकता है। जब मनुष्य को पर्याप्त मात्रा में संतुलित भोजन नहीं मिलता तो उसका शारीरिक और बौद्धिक विकास अवरुद्ध होता है। वह सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक विसंगतियों के जाल में बड़े ही सहजता से फंस जाता है। पेट की आग (भूख) मनुष्य को हैवान बना सकती है, दूसरों के आगे गिड़गिड़ाने को बाध्य कर देती है और उपहास का पात्र बनाकर उसका आत्मविश्वास छीन लेती है।

'कफ़न' कहानी में भी घीसू और माधव सामाजिक परिस्थितियों से त्रस्त होकर ही अपनी नैतिकता से समझौता करते हुए आलुओं के चंद टुकड़ों के लिए बुधिया की जान की परवाह नहीं करते। उनकी संवेदनशून्यता परिस्थिति जन्य थी। परिस्थितियाँ बदलते ही उनमें उत्तम सद्‌गुणों, दया, करुणा की झलक दिखलायी पड़ती है। इसलिए ही इन दोनों की संवेदनशून्यता के लिए प्रत्यक्ष रूप से 'भूख' और परोक्ष रूप से 'व्यवस्था' उत्तरदायी है –

> "घीसू ने समझाया, 'क्यों रोता है बेटा। खुश हो कि वह माया–जाल से मुक्त हो गई। जंजाल से छूट गई। बड़ी भाग्यवान थी जो इतनी जल्द माया–मोह के बंधन तोड़ दिए।"[4]

मुंशी प्रेमचंद की कालजयी कृति 'कफ़न' कथावस्तु एवं कथाशिल्प में विशिष्ट है। घीसू और माधव मात्र चरित्र–भर नहीं हैं अपितु समाज की एक नग्न सच्चाई हैं। घीसू और माधव कर्ज़ से लदे थे, फिर भी चिंताओं से मुक्त थे। उनकी मानवीय संवेदना पूर्णतः मर चुकी थी इस कारण ही प्रसव पीड़ा से छटपटाती बुधिया की मृत्यु को भी वह दोनों निर्लिप्त भाव से सह लेते हैं।

निष्कर्ष

अस्तु, 'कफ़न' सामाजिक यथार्थवाद का दर्पण है। मुंशी प्रेमचंद ने अपने जीवन के समस्त अनुभवों का निचोड़ इसमें प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद ने जिन समस्याओं को उजागर किया है। वे आज भी समाज में व्याप्त हैं, भले ही उनका स्वरूप अल्प रूप से परिवर्तित हो गया हो। वर्तमान संदर्भ में अपनी प्रासंगिकता के कारण 'कफ़न' हिंदी की यथार्थवादी कहानियों में श्रेष्ठ स्थान रखती है।

संदर्भ सूची

1. सामाजिक चेतना (निबंध):: कमला प्रसादः प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, पृष्ठ–27
2. कफ़नः: प्रेमचंदः मयंक सक्सेना (संपा०): उत्तर प्रदेश, आगरा, पृष्ठ–1
3. कफ़नः: प्रेमचंदः मयंक सक्सेना (संपा०): उत्तर प्रदेश, आगरा, पृष्ठ–2
4. कफ़नः: प्रेमचंदः मयंक सक्सेना (संपा०): उत्तर प्रदेश, आगरा, पृष्ठ–6